राष्ट्रीय आय की संकल्पना व गणना की विधियां –

राष्ट्रीय आय एक देश के सभी सामान्य निवासियों द्वारा एक वर्ष की अवधि में अर्जित कुल साधन आय का योग होता है। राष्ट्रीय आय से अभिप्राय साधन आयों के जोड़ से है। जिसमें किसी देश के सामान्य निवासियों द्वारा प्रदान की गई साधन सेवाओं के बदले में प्राप्त आय (लगान , ब्याज , लाभ , मजदूरी) के जोड़ से है।

मार्शल के अनुसार, "किसी देश का श्रम और पूँजी उसके प्राकृतिक साधनों पर कार्यशील होकर प्रति वर्ष भौतिक और अभौतिक वस्तुओं का निश्चित वास्तविक उत्पादन करते हैं जिनमें सब प्रकार की सेवाएँ भी शामिल रहती हैं । इसे ही देश की वास्तविक राष्ट्रीय आय कहते हैं।"

पीगू के अनुसार, "राष्ट्रीय आय समाज की वस्तुगत आय का वह भाग है, जिसे मुद्रा में मापा जा सकता है एवं जिसमें विदेशों से प्राप्त आय भी शामिल रहती है।"

प्रो. इरविंग फिशर ने मार्शल और पीगू के दृष्टिकोण से भिन्न राष्ट्रीय आय की परिभाषा प्रस्तुत की है । जहाँ मार्शल और पीगू ने उत्पादन को आधार मानकर राष्ट्रीय आय की परिभाषा दी है, फिशर ने उपभोग के आधार पर राष्ट्रीय आय को परिभाषित किया है । फिशर के अनुसार, "वास्तविक राष्ट्रीय आय, एक वर्ष में उत्पादित शुद्ध उपज का वह अंश है जिसका उस वर्ष में प्रत्यक्ष रूप से उपभोग किया जाता है। इसे स्पष्ट करते हुए फिशर ने बताया कि "राष्ट्रीय लाभांश अथवा आय में केवल उन सेवाओं को शामिल किया जाता है जो अन्तिम उपभोक्ता द्वारा प्राप्त की जाती हैं । इस प्रकार एक पियानो या ओवरकोट जो मेरे लिए इस वर्ष बनाया गया है इस वर्ष की आय का भाग नहीं है केवल पूँजी में वृद्धि है। केवल उतनी ही सेवा जो इन वस्तुओं से मुझे इस वर्ष प्राप्त होगी आय में शामिल होगी ।" पीगू की परिभाषा से स्पष्ट है कि राष्ट्रीय आय में केवल वे ही वस्तुएँ और सेवाएँ शामिल होती हैं जिनका बाजार में विनिमय किया जा सकता है क्योंकि मुद्रा में उसी समय वस्तुओं को मापा जा सकता है जब उनका विनिमय किया जा सके।

प्रो. साइमन कुजनेट्स की परिभाषा फिशर से मिलती–जुलती है क्योंकि उसमें उपभोग पर ध्यान केन्द्रित किया गया है । यह इस प्रकार है – "राष्ट्रीय आय वस्तुओं और सेवाओं का वह वास्तविक उत्पादन है जो एक वर्ष की अवधि में देश की उत्पादन प्रणाली से अन्तिम उपभोक्ताओं के हाथों में पहुँचता है ।"

राष्ट्रीय आय किसी देश के सामान्य निवासियों द्वारा एक लेखा वर्ष में मजदूरी, लगान, ब्याज तथा लाभ के रूप में अर्जित साधन आय का योग है।"

घरेलू सीमा किसी देश की घरेलू सीमा की धारणा, राजनैतिक सीमा से अधिक विस्तृत है। इसके अन्तर्गत राजनीतिक सीमा के अतिरिक्त देश की जल सीमा तथा देश के निवासियों द्वारा विभिन्न देशों में चलाए जाने वाले जलयान , वायुयान तथा दूतावास सम्मिलित होते हैं।

Dr. Dinesh K. Gupta
E-Mail: economicsdkg@gmail.com

राष्ट्रीय आय की विभिन्न संकल्पनाएँ–

1. सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) – एक अर्थव्यवस्था में, एक वर्ष में पैदा सभी अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं का मौद्रिक मूल्य है जिसकी गणना, दोहरी गणना के बिना की जाती है। यह गणना बाजारी प्रचलित कीमतों पर की जाती है।

2. सकल घरेलू उत्पाद (GDP) – किसी देश में एक वर्ष की अवधि में जिन वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन किया जाता है, उनके मौद्रिक मूल्य को ही घरेलू उत्पाद कहते है। इस मूल्य में से विदेशियों द्वारा अर्जित आय को घटा दिया जाता हैं और विदेशों से प्राप्त आय को जोड़ दिया जाता है।

सकल घरेलू उत्पाद (**GDP**) = कुल राष्ट्रीय उत्पाद – (निर्यात – आयात मूल्य)

3. शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNP)– कुल राष्ट्रीय उत्पाद में से मूल्यह्रास को घटा देने से शेष बचता है उसे शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद कहते है।

शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद = कुल राष्ट्रीय उत्पाद – मूल्यह्रास

4. शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP) – किसी देश में एक वर्ष की अवधि में देश के अपने ही साधनों द्वारा उत्पादित वस्तुओं तथा सेवाओं के कुल मौद्रिक मूल्य में से यदि घिसावट व्यय अथवा मूलयह्रास व्यय घटा दिया तो जो शेष बचता है, उसे शुद्ध घरेलू उत्पाद कहते है।

शुद्ध घरेलू उत्पाद (**NDP**) = कुल घरेलू उत्पाद – घिसावट व्यय

5. साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय आय (NNP_{FC}) – बाजार मूल्यों पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद में से परोक्ष कर घटाने व आर्थिक सहायता जोड़ने से जो राशि आती है, वह साधन लागत पर विशुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद कहलाती है। इसे ही देश की राष्ट्रीय आय कहा जाता है।

राष्ट्रीय आय = शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद – परोक्ष कर + आर्थिक सहायता

6. वैयक्तिक आय (Personal Income) – एक वर्ष की अवधि में एक देश के सभी व्यक्ति या परिवार जितनी आय वास्तव में प्राप्त करते है, उन सभी आयों के योग को वैयक्तिक आय कहते है। इसके अर्न्तगत हम मजदूरी, वेतन, ब्याज, लगान तथा लाभांश आदि को सम्मिलित करते है।

राष्ट्रीय आय में से वैयक्ति आय निकालने के लिए।

वैयक्तिक आय = राष्ट्रीय आय – (सामाजिक सुरक्षा कटौती. संयुक्त पूँजी वाली कम्पनिया के लाभ – हस्तान्तरित भुगतान।

7 उपभोग्य आय (Disposable Income) – व्यक्ति तथा परिवारों के पास जो वैयक्तिक आय होती है, वह सब उपभोग कार्यो पर व्यय नहीं की जाती, आय का एक भाग वैयक्तिक करों के रूप में सरकार को भुगतान करना होता है और जो भाग शेष बचा रहता है, उपभोग के काम आता है।

उपभोग्य आय = वैयक्तिक आय – वैयक्तिक कर

Dr. Dinesh K. Gupta
E-Mail: economicsdkg@gmail.com

परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि उपभोग्य आय पूरी तरह से उपभोग पर व्यय कर दी जाए। जो व्यक्ति अपनी आय का कुछ भाग बचा लेते है उसे बचत कहते है।

उपभोग्य आय = उपभोग्य. बचत

राष्ट्रीय आय की गणना की विधियॉ

1. उत्पादन प्रणाली – इस प्रणाली में देश के समस्त उद्योगों, कृषि तथा अन्य प्रकार के व्यवसायों की कुल उपज का मूल्य चालू कीमतों पर निकाला जाता है और इससे चल व अचल प्रतिस्थापन घटाकर जो शुद्ध उत्पाद बचती है, वही उस वर्ष की राष्ट्रीय आय होती है। इसका प्रयोग वहॉ किया जाता है जहॉ पर ऑकड़े उपलब्ध होतो है।

उत्पाद विधि या मूल्य वृद्धि विधि वह विधि है जो एक लेखा वर्ष में देश की घरेलू सीमा के अन्तर्गत प्रत्येक उत्पादक उद्यम के उत्पादन में योगदान की गणना करके राष्ट्रीय आय को मापती है।

मूल्य वृद्धि की धारणा :–

मूल्य वृद्धि किसी उद्यम के उत्पाद के मूल्य तथा इसके मध्यवर्ती उपभोग के मूल्य का अंतर है।

मूल्य वृद्धि = उत्पाद का मूल्य – मध्यवर्ती उपभोग व्यय

2. आय प्रणाली – इस प्रणाली के अन्तर्गत राष्ट्रीय आय का अनुमान देश के विभिन्न वयक्तियों के दो वर्गो की आय जोड़कर किया जाता है। इसमें सर्वप्रथम आय को पॉच वर्गो में विभाजित किया जाता है।

1. कर्चचारियों का वेतन
2. गैर–कम्पनी व्यापारों की आय
3. व्यक्तियों की किराए की आय
4. कम्पनियों के लाभ
5. ब्याज से आय

उपरोक्त सभी आय को जोड़कर राष्ट्रीय आय ज्ञात कर ली जाती है।

3. व्यय प्रणाली – इस प्रणाली के अन्तर्गत राष्ट्रीय आय को ज्ञात करने के लिए वर्ष भर में वस्तुओं व सेवाओं पर किए जाने वाले कुल व्यय को जोड़ा को जोड़ा जाता है।

व्यय का वर्गीकरण :–

अन्तिम व्यय का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जाता है : –

(1) निजी अन्तिम उपभोग व्यय - इससे अभिप्राय व्यक्तियों , परिवारों तथा गैर–लाभवाली निजी संस्थाएं या सेवा जैसे द्वारा अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं पर किए गए व्यय से होता है।

Dr. Dinesh K. Gupta
E-Mail: economicsdkg@gmail.com

(2) सरकार द्वारा अन्तिम उपभोग व्यय – इससे अभिप्राय सरकार द्वारा अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं पर किए जाने वाले व्यय से है , जैसे सेना द्वारा उपभोग के लिए वस्तुओं की खरीद पर व्यय।

(3) निवेश व्यय – इससे अभिप्राय उत्पादकों द्वारा अन्तिम वस्तुओं की खरीद पर किए गए व्यय से है। इन वस्तुओं का उत्पादन प्रक्रिया में आगे प्रयोग किया जाता है।

मिश्रित आय : स्वरोजगार व्यक्ति जैसे किसान छोटे दुकानदार , डॉक्टर आदि अपने साधनों जैसे श्रम , पूंजी , भूमि आदि की सहायता से वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन करते हैं। अतएव उन्हें ब्याज , लाभ , लगान , मजदूरी के रूप में मिली जुली आय प्राप्त होती है। इसलिए इसको मिश्रित आय कहा जाता है। इस आय को भी राष्ट्रीय आय में भी शामिल किया जाता है।

उपरोक्त तीनों मदों से प्राप्त आय को जोड़कर शुद्ध घरेलू आय का अनुमान लगाया जाता है। एक देश की घरेलू सीमा के अन्दर सृजित आय के कुल जोड़ का साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद कहते हैं।

Dr. Dinesh K. Gupta
E-Mail: economicsdkg@gmail.com